डोगरी या हिंदी नहीं, भारतीय साहित्य की प्रबल प्रतिनिधि थीं पद्मा सचदेव

नई दिल्ली (एसएनबी)। साहित्य अकादेमी की ओर से मंगलवार को डोगरी और हिंदी की प्रख्यात लेखिका, कवयित्री और अनुवादिका पद्मा सचदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में आये अतिथियों का स्वागत अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अंगवस्त्रम भेंट कर किया। अपने स्वागत वक्तव्य में के. श्रीनिवासराव ने कहा कि पद्मा का गहरा स्नेह उन्हें प्राप्त था। उन्होंने पद्मा सचदेव की साहित्यिक यात्रा और उनकी रचनाओं पर भी विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि पद्मा सचदेव मात्र डोगरी या हिंदी की ही नहीं, बल्कि भारतीय साहित्य की प्रबल प्रतिनिधि थीं।

साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक मोहन सिंह ने आरंभिक वक्तव्य देते हुए कहा कि पद्मा सचदेव का व्यक्तित्व बहुमुखी था, और यह उनके विविध तथा विपुल लेखन में भी दिखता है। डोगरी और पद्मा सचदेव एक दूसरे का पर्याय बन गए हैं। उन्होंने कहा कि पद्मा सचदेव ने डोगरी भाषा को संविधान की आठवी अनुसूची में शामिल कराने के लिए जम्मू से लेकर दिल्ली तक बड़ा संघर्ष किया था।

विजय वर्मा ने अपने संस्मरणों के माध्यम से पद्मा सचदेव के वत्सल व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी रचनाओं की विशिष्टता को भी रेखांकित किया। डोगरी के प्रख्यात लेखक ओम गोस्वामी ने अपने वक्तव्य में कहा कि पद्मा सचदेव के व्यक्तित्व पर चर्चा की। सरिता खजूरिया ने 'पद्मा सचदेव की कविता' पर तथा सुषमा चौधरी ने 'पद्मा सचदेव की कहानियां और उपन्यास' पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुषमा रानी राजपूत ने 'पद्मा सचदेव का हिंदी साहित्य को योगदान' पर तथा खजूर सिंह ठाकुर ने 'पद्मा सचदेव का डोगरी साहित्य को योगदान' विषय पर अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी में संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

■ साहित्य अकादेमी की ओर से पद्मा सचदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित परिसंवाद का आयोजन